ज्योतिष : एक वैश्विक विश्वास प्रणाली का निरंतर प्रवाह

ज्योतिषाचार्य
तेजस्कर पाण्डेय

मानव सभ्यता के इतिहास में जब हम पीछे मुड़कर देखते हैं तो सबसे पहली छवि जो उभरती है, वह है आकाश को निहारते हुए मनुष्य की. प्राचीन मानव ने जब रात के गगन में असंख्य तारों को चमकते देखा, सूर्य की प्रभा और चंद्रमा की कलाओं को देखा, ऋतुओं के परिवर्तन और मौसम की अनिश्चितताओं को अनुभव किया, तो उसे लगा कि इन सबके पीछे कोई गहरी शक्ति है, कोई रहस्य है जो उसकी नियति को नियंत्रित करता है. इसी अनुभव से ज्योतिष की परंपरा जन्मी, और यह धीरे-धीरे एक ऐसी विश्वास प्रणाली में बदल गई जिसने न केवल धार्मिक आस्थाओं, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक संरचनाओं को भी आकार दिया.

ज्योतिष को वेदों की आँख कहा गया है. इसका आशय केवल यह नहीं कि यह खगोल विज्ञान का एक हिस्सा है, बल्कि यह भी है कि यह मानव जीवन को दिशा देने वाला ज्ञान है. आकाशीय पिंडों की गति और स्थिति को देखकर मनुष्य ने अपने जीवन की घटनाओं का अनुमान लगाया और उन्हें शुभ-अशुभ अर्थों से जोड़ा. यही कारण है कि चाहे वह सुमेरियन सभ्यता हो या बाबुली, यूनानी हो या रोमन, भारतीय हो या चीनी, हर सभ्यता ने अपने तरीके से ज्योतिष को एक विश्वास प्रणाली के रूप में विकसित किया. यह विश्वास इस बात पर आधारित था कि आकाश में होने वाले परिवर्तन सीधे धरती पर घटित घटनाओं से जुड़े हुए हैं.

सुमेरियन सभ्यता में शुक्र ग्रह की देवी इनन्ना की कथा सबसे प्राचीन साक्ष्य है. इनन्ना प्रेम, युद्ध और प्रजनन की देवी थी. उसका अधोलोक की ओर अवरोह और पुनरागमन जीवन, मृत्यु और पुनर्जन्म के रहस्यों का प्रतीक था. यह केवल एक देवी की कथा नहीं थी, बल्कि यह मनुष्य की उस गहरी अनुभूति को व्यक्त करती थी कि जीवन और मृत्यु दोनों एक ही चक्र के दो पहलू हैं. यही विचार बाद में बाबुल की इश्तर और यूनान की अफ्रोदिती में दिखाई देता है. रोम में यह देवी वीनस बनी, जिसने केवल प्रेम और सौंदर्य ही नहीं बल्कि साम्राज्य की शक्ति और विजय को भी वैधता प्रदान की. इस प्रकार पश्चिमी परंपरा में ज्योतिषीय ग्रह केवल व्यक्तिगत भाग्य का द्योतक नहीं रहे, बल्कि सामाजिक और राजनीतिक संरचना का भी अंग बन गए.

भारतीय परंपरा में ज्योतिष का स्वरूप और भी गहन और दार्शनिक है. वेदों में इसे वेदांग कहा गया, जिसका अर्थ है वेदों का अविभाज्य अंग. यज्ञ, विवाह, संतानोत्पत्ति, गृह-प्रवेश, यात्राएँ - ये सभी कर्म ज्योतिष के बिना अधूरे माने गए. यहाँ पंचांग और मुहूर्त का महत्त्व सर्वोपरि रहा. केवल इतना ही नहीं, भारतीय दर्शन ने ज्योतिष को ब्रह्मांडीय व्यवस्था और धर्म के सिद्धांत से जोड़ा. ग्रहों को देवता रूप में मानकर उनकी पूजा की परंपरा भी विकसित हुई. शुक्राचार्य और बृहस्पति जैसे ग्रहाचार्य केवल पौराणिक पात्र नहीं, बल्कि ज्ञान और जीवन-मार्गदर्शन के प्रतीक थे. इस प्रकार भारतीय दृष्टिकोण में ज्योतिष केवल भविष्यवाणी की कला नहीं बल्कि धर्म, दर्शन और संस्कृति का केंद्र है. आज के युग में, जब विज्ञान और तर्कवाद ने अनेक रहस्यों को उजागर कर दिया है, तब भी ज्योतिष का आकर्षण बना हुआ है. यह स्थिति केवल भारत की नहीं, बल्कि पूरे विश्व की है. पश्चिमी देशों में राशिफल कॉलम, अखबारों और पत्रिकाओं में आज भी लोकप्रिय हैं. लोग अपने दिन की शुरुआत ही इस विचार से करते हैं कि उनकी राशि के लिए आज का दिन कैसा रहेगा. भारत में तो विवाह-मुहूर्त से लेकर व्यवसाय आरंभ करने तक, जीवन की हर बड़ी घटना ज्योतिष से जुड़ी होती है. गाँव-गाँव में ज्योतिषी बैठते हैं और लोग उन्हें जीवन की राह दिखाने वाला मानते हैं. शहरी जीवन में भी यह विश्वास उतना ही गहरा है. ऑनलाइन ज्योतिष परामर्श, मोबाइल एप और टेलीविजन चैनलों के कार्यक्रम इसके आधुनिक स्वरूप का प्रमाण हैं.

यहाँ यह प्रश्न उठता है कि जब विज्ञान ने यह स्पष्ट कर दिया है कि ग्रह-नक्षत्रों की गति का सीधा संबंध व्यक्तिगत भाग्य से नहीं है, तब भी ज्योतिष क्यों जीवित है? इसका उत्तर इस बात में छिपा है कि ज्योतिष केवल वैज्ञानिक सत्य का प्रश्न नहीं, बल्कि मनोवैज्ञानिक और सांस्कृतिक आवश्यकता का उत्तर है. मनुष्य को अपने जीवन की अनिश्चितताओं से निपटने के लिए अर्थ और दिशा चाहिए. जब वह भविष्य की अनिश्चितताओं से डरता है, तो ज्योतिष उसे सांत्वना और मार्गदर्शन देता है. जब वह किसी निर्णय को लेकर असमंजस में होता है, तो ज्योतिष उसे आत्मविश्वास और विश्वास का आधार देता है. यही कारण है कि यह विश्वास प्रणाली आलोचना के बावजूद स्थायी बनी हुई है.

वैज्ञानिक दृष्टिकोण और ज्योतिषीय विश्वास के बीच का यह द्वंद्व सदैव से चला आ रहा है. एक ओर विज्ञान घटनाओं के कैसे का उत्तर देता है, जबकि ज्योतिष घटनाओं के क्यों का उत्तर देने का प्रयास करता है. विज्ञान बताता है कि ग्रह क्यों चलते हैं, किस प्रकार उनके आकर्षण-बल से घटनाएँ घटित होती हैं, लेकिन ज्योतिष यह बताने की कोशिश करता है कि इन गतियों का मानव जीवन से क्या संबंध है और मनुष्य उन्हें कैसे समझे. यही कारण है कि ज्योतिष भले ही वैज्ञानिक कसौटियों पर खरा न उतर पाए, पर विश्वास की कसौटी पर यह सदा जीवित रहता है. विश्वास प्रणालियाँ समाज को एक सामूहिक अर्थ देती हैं. धर्म, कला, साहित्य, संस्कृति और रीति-रिवाज - सब मिलकर विश्वास प्रणालियों को जन्म देते हैं. ज्योतिष भी एक ऐसी ही प्रणाली है. यह लोगों को आश्वस्त करती है कि ब्रह्मांड का हर परिवर्तन उनके जीवन से जुड़ा है और उनका भाग्य किसी अदृश्य नियम से संचालित हो रहा है. यही विश्वास उन्हें जीवन की कठिनाइयों का सामना करने की शक्ति देता है. भारतीय समाज में इसका उदाहरण स्पष्ट रूप से दिखाई देता है. विवाह के समय कुंडली मिलान केवल औपचारिक परंपरा नहीं, बल्कि सामाजिक संबंधों को स्थायी और सुरक्षित बनाने का माध्यम माना जाता है. गृह-प्रवेश या नया व्यवसाय शुरू करने का समय तय करने में मुहूर्त देखने की परंपरा भी इसी विश्वास पर आधारित है. यह विश्वास ग्रामीण और अशिक्षित समाज तक सीमित नहीं, बल्कि शिक्षित और आधुनिक वर्गों तक में समान रूप से प्रचलित है. पश्चिमी समाज में भी लोग ज्योतिष को मनोरंजन के रूप में देखें या विश्वास के रूप में, पर उसका आकर्षण कम नहीं हुआ.

> आधुनिक युग में ज्योतिष पर आलोचनाएँ भी हुई हैं और इसे अंधविश्वास भी कहा गया है. किंतु यह भी उतना ही सत्य है कि यह विश्वास प्रणाली अब भी जीवित है और आगे भी रहेगी. इसका कारण यही है कि यह केवल तथ्यों का ज्ञान नहीं देती, बल्कि जीवन का अर्थ देती है. मनुष्य को केवल उत्तर ही नहीं चाहिए, उसे आशा भी चाहिए, और ज्योतिष यही आशा प्रदान करता है. इस प्रकार ज्योतिष एक ऐसी वैश्विक विश्वास प्रणाली है जिसने अतीत से लेकर वर्तमान तक मानव सभ्यता को दिशा दी है. यह केवल वैज्ञानिक प्रश्न नहीं, बल्कि सांस्कृतिक, दार्शनिक और मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है. यही कारण है कि यह विश्वास प्रणाली आधुनिक युग में भी प्रासंगिक बनी हुई है और भविष्य में भी बनी रहेगी.

शुक्ल योग में शुरू हो रहा शारदीय नवरात्रि

देवी शक्ति की आराधना का महापर्व शारदीय नवरात्रि इस वर्ष 22 सितंबर, सोमवार से प्रारंभ हो रहा है. यह नवरात्रि 10 दिनों की रहेगी, जिसका समापन 11वें दिन दुर्गा विसर्जन के साथ होगा. ज्योतिषाचार्यों के अनुसार, इस बार चतुर्थी तिथि दो दिन पड़ने के कारण नवरात्रि 10 दिन की हो रही है. इस दौरान मां दुर्गा का आगमन हाथी पर होगा, जो सुख-समृद्धि का प्रतीक माना जाता है. देवी की विदाई नरवाहन पर होगी, जो भक्तों के कंधों पर सवार होकर जाएंगी. नवरात्रि का आरंभ इस बार शुभ शुक्ल योग में हो रहा है, यह योग कार्यों में सफलता और मंगलकारी माना जाता है. इस दौरान की गई कलश स्थापना और मां दुर्गा का आह्वान विशेष रूप से फलदायी होता है.

शुभ योग में होगी कलश स्थापना

घटस्थापना (कलश स्थापना) के शुभ मुहूर्त

मुख्य मुहूर्त-	सुबह 6:10 बजे से 8:06 बजे तक.
अभिजीत मुहूर्त-	सुबह 11:50 बजे से दोपहर 12:39 बजे तक.

घटस्थापना नवरात्रि के पहले दिन होती है, जिसमें देवी दुर्गा की ऊर्जा को एक पवित्र कलश में आमंत्रित किया जाता है. यह कलश ब्रह्मांड और देवी के स्वरूप का प्रतीक होता है.

पूजा सामग्री- मां दुर्गा की पूजा पूरे विधि-विधान से करने के लिए इन आवश्यक वस्तुओं को पहले से तैयार कर लें-

- कलश (तांबे/मिट्टी का), जल, तिल, सिक्के, सुपारी
- आम और अशोक के पत्ते, लाल फूल, सिंदूर, रोली, चंदन
- पूजा चौकी और लाल या पीला कपड़ा
- 7 तरह के अनाज
- पंचमेवा, नारियल, पान का पत्ता
- धूप, दीप, कपूर और गुग्गल
- अखंड ज्योति के लिए बड़ा दीपक
- दुर्गा सप्तशती और आरती की पुस्तक

सोने को सही जगह पहनने से मिलता है लाभ

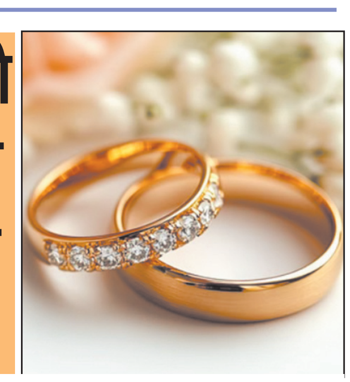

सदियों से सोने को केवल आभूषण के रूप में ही नहीं, बल्कि समृद्धि, शुभता और सकारात्मक ऊर्जा के प्रतीक के तौर पर भी देखा जाता है. ज्योतिष और वास्तु शास्त्र के अनुसार, शरीर के विभिन्न अंगों पर सोना धारण करने से व्यक्ति के जीवन में सुख-समृद्धि और सफलता आती है. माना जाता है कि सोने को सही तरीके से पहनने पर यह भाग्य के द्वार खोलता है और जीवन की परेशानियों को कम कर सकता है.

सोने का सही स्थान और उसके लाभ

गले में सोना- गले में सोने की चेन पहनना वैवाहिक जीवन के लिए शुभ माना जाता है. इससे पति-पत्नी के रिश्तों में सामंजस्य बढ़ता है और मधुरता आती है. हृदय रोगों से ग्रस्त लोगों के लिए भी इसे लाभकारी बताया गया है.

अनामिका (रिंग फिंगर) में सोने की अंगूठी- इस उंगली में सोने की अंगूठी धारण करना पारिवारिक सुख और संतान प्राप्ति से जुड़ा है. जिन दंपतियों को संतान सुख की कामना है, उनके लिए यह उपाय विशेष फलदायी माना जाता है.

तर्जनी (इंडेक्स फिंगर) में सोने की अंगूठी- करियर और नौकरी में तरक्की की चाह रखने वालों के लिए तर्जनी उंगली में सोना पहनना शुभ होता है. यह उंगली महत्वाकांक्षा और निर्णय लेने की क्षमता को बढ़ाती है, जिससे नई नौकरी या प्रमोशन में मदद मिल सकती है.

कनिष्ठिका (लिटिल फिंगर) में सोने की अंगूठी- मानसिक शांति और बेहतर स्वास्थ्य के लिए कनिष्ठिका उंगली में सोना पहनना फायदेमंद हो सकता है. यह सर्दी-जुकाम, बेचैनी और नींद की समस्याओं में राहत देने वाला माना जाता है.

रुद्राक्ष के साथ सोना- रुद्राक्ष के साथ सोने का आवरण या इसे सोने की चेन में धारण करना हृदय रोगियों के लिए लाभकारी माना गया है, क्योंकि यह हृदय की कमजोरी और संबंधित रोगों में सहायक होता है.

वास्तु के अनुसार पूजा घर में मूर्तियों की स्थापना और रंग

पूजा-पाठ से जुड़ी चीजों में लोग अनजाने में कई बार ऐसी गलतियां कर देते हैं, जिससे घर में वास्तु दोष उत्पन्न हो सकते हैं. वास्तुशास्त्र में पूजा घर को लेकर कुछ खास नियम बताए गए हैं, जिनका पालन करने से इन दोषों से बचा जा सकता है. ये नियम मूर्तियों की स्थापना से लेकर पूजा घर के रंगों तक से संबंधित हैं.

मूर्तियों की स्थापना के नियम- वास्तुशास्त्र के अनुसार, पूजा घर में मूर्तियों को कभी भी एक-दूसरे के ठीक सामने नहीं रखना चाहिए. मूर्तियों को हमेशा फर्श से थोड़ी ऊंचाई पर स्थापित करना चाहिए, और उन्हें दीवार से एक इंच की दूरी पर रखना शुभ माना जाता है. दीपक और बाती की दिशा हमेशा दक्षिण-पूर्व की ओर होनी चाहिए. इसके अलावा, पूजा घर में कुछ चीजों को बिल्कुल भी नहीं रखना चाहिए. इनमें किसी भी रूप में खंडित मूर्तियां, जली हुई माचिस सूखे हुए फूल शामिल हैं.

पूजा घर के लिए सही रंग

वास्तु के हिसाब से पूजा घर का रंग चुनना बहुत फायदेमंद हो सकता है. हर रंग की अपनी एक ऊर्जा होती है. शास्त्रों के अनुसार, पूजा घर के लिए सफेद, हल्का पीला हल्का नीला रंग सबसे शुभ होता है. सफेद रंग शुद्धता का प्रतीक है, नीला रंग शांति देता है, पीला रंग सुकून प्रदान करता है. पूजा घर में काले, बैंगनी जैसे रंगों का इस्तेमाल करने से बचना चाहिए.

बेडरूम को तनावमुक्त बनाएं

फेंगशुई के इन नियमों का करें पालन

> कुछ साधारण नियमों का पालन करके बेडरूम की ऊर्जा को बढ़ाया जा सकता है, जबकि कुछ सामान्य आदतें नकारात्मक प्रभाव डाल सकती हैं.

दिन भर की थकान और तनाव से राहत पाने के लिए बेडरूम सबसे महत्वपूर्ण जगह होती है. इस स्थान की ऊर्जा जितनी अधिक सकारात्मक होगी, मानसिक शांति और आराम उतना ही अधिक मिलेगा.

फेंगशुई के अनुसार, कुछ साधारण नियमों का पालन करके बेडरूम की ऊर्जा को बढ़ाया जा सकता है, जबकि कुछ सामान्य आदतें नकारात्मक प्रभाव डाल सकती हैं. फेंगशुई विशेषज्ञों के अनुसार, बेडरूम में इन बातों का ध्यान रखना आवश्यक है-

रंगों का चुनाव

दीवारों पर गहरे रंगों जैसे नीला या गहरा भूरा रंग करवाने से बचें. फेंगशुई के अनुसार, गहरे रंग तनाव और गुस्सा बढ़ा सकते हैं, जिससे नींद पर भी बुरा असर पड़ता है. हल्के और शांत रंग, जैसे सफेद या क्रीम, को प्राथमिकता दें.

बिस्तर के नीचे की सफाई

बिस्तर के नीचे कोई भी सामान न रखें. भले ही यह जगह दिखाई न दे, लेकिन इसके नीचे रखी चीजें ऊर्जा के प्रवाह को बाधित करती हैं और जीवन में बाधाएं ला सकती हैं. बिस्तर के नीचे की जगह को हमेशा साफ और खाली रखना चाहिए.

बिस्तर की सही दिशा

बिस्तर को सीधे दरवाजे के सामने न रखें. फेंगशुई में इसे अशुभ माना जाता है. बिस्तर की स्थिति ऐसी होनी चाहिए कि कमरे में प्रवेश करते ही आप उसे आसानी से देख सकें, लेकिन वह सीधे दरवाजे की लाइन में न हो.

बेडरूम में पूजा स्थल

पूजा की जगह को अत्यंत पवित्र माना जाता है. फेंगशुई के नियमों के अनुसार, पूजा घर के लिए एक अलग और शांत कमरा होना चाहिए. बेडरूम में पूजा स्थल बनाने से बचें.

नकारात्मक तस्वीरें

बेडरूम में ऐसी कोई पेंटिंग या तस्वीर न लगाएं जो उदासी, संघर्ष या नकारात्मकता का भाव दर्शाती हो. ऐसी तस्वीरें मन में नकारात्मक विचार ला सकती हैं. इसके बजाय, शांति और खुशी दर्शाने वाली कलाकृतियों का चुनाव करें.

पानी से जुड़ी वस्तुएं

बेडरूम में पानी से संबंधित कोई भी चीज, जैसे डेकोरेटिव फाउंटेन या एक्वेरियम, नहीं रखनी चाहिए. फेंगशुई के मुताबिक, इससे धन की हानि हो सकती है और रिश्तों में भी दूरियां आ सकती हैं.

जूते-चप्पल से दूरी

बेडरूम में जूते-चप्पल रखने से नकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है. इससे सेहत पर भी बुरा असर पड़ सकता है और सोच भी नकारात्मक होती जाती है. अपने बेडरूम को इन चीजों से मुक्त रखें.

इन सरल फेंगशुई नियमों का पालन करके आप अपने बेडरूम को एक सकारात्मक और तनावमुक्त स्थान में बदल सकते हैं, जिससे आपके जीवन में शांति और सुकून बढ़ेगा.

राशिफल

दिनांक- 21 से 27 सितम्बर 2025 तक

ज्योतिषाचार्य प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर मो.नं. 098266-21998

साप्ताहिक ग्रहस्थिति- इस सप्ताह सूर्य कन्या राशि में, मंगल तुला राशि में, बुध कन्या राशि में, गुरू मिथुन राशि में, शुक्र सिंह राशि में, शनि मीन राशि में, राहु कुम्भ राशि में, केतु सिंह राशि में और चन्द्रमा सिंह कन्या तुला और वृश्चिक राशि में संचरण करेगा.

ग्रहयोगों का प्रभाव :- ता. 23 को मंगल स्वाती नक्षत्र में प्रवेश करता है और इसी दिन चन्द्रदर्शन भी है जिसके प्रभाव से ग्रहयोग मंदी कारक है परन्तु स्वाती नक्षत्र का मंगल तेजी मंदी के झटके देता है अत: बाजार का रूख देखकर व्यापारी कार्य करें हमारे विचार से इन दिनों लगभग 5 दिन अनाज, घी, चांदी, कपास, चांवल, चंदन, कपूर, गुड़, खाड़, शक्कर में मंदी का रूख रहेगा, इन दिनों रूई, चांदी में घटाबढ़ी के रिऐक्शन आयेंगे अंतत: तेजी प्रधान रहेगी. ता. 27 को रवि हस्त नक्षत्र में प्रवेश करता है जिसके प्रभाव से वायदा बाजार और हाजर बाजारों में तेजी प्रधान रहेगी, रेशम, सोना, चांदी, गेहूं, चना, उदड़, ज्वार, बाजरा, घी, सरसों, तिल, तेल, गुड़, खाड़, नील, रूई, पीपलामूल में तेजी होगी.

पर्व/व्रत/त्यौहार :

रविवार	21 सितम्बर को	महालय समाप्त, पितृ मोक्ष अमावस्या, पितृ विसर्जन, अज्ञात तिथि श्राद्ध
सोमवार	22 सितम्बर को	बैठकी, शारदीय नवरात्रारंभ, घटस्थापना, मातामह श्राद्ध, महाराजा अग्रसेन जयंती
मंगलवार	23 सितम्बर को	चन्द्रदर्शन
गुरूवार	25 सितम्बर को	विनायकी चतुर्थी व्रत
शुक्रवार	26 सितम्बर को	उपांग ललिता व्रत

मेष

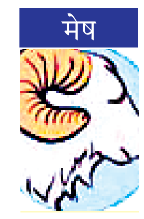

इस सप्ताह कुछ अच्छे दोस्त बन सकते हैं, जो आपकी मदद कर सकते हैं, घरेलू कार्यो को जिम्मेदारी से करें, टालमटोल की प्रवृत्ति का परिणाम हानिप्रद हो सकता है, घरेलू माहौल खुशनुमा रहेगा, सप्ताह के मध्य बढ़ते हुये खर्च सामने आयेंगे, व्यापार की कार्य योजना का विस्तार होगा, अधिक जल्दबाजी से निर्णय न करना हितकर रहेगा, सत्संग में रूचि रहेगी.

वृषभ

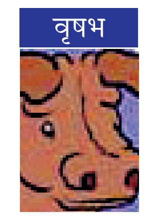

इस सप्ताह यदि अस्वस्थ्य हैं, और कमजोरी है, तो स्वास्थ्य में सुधार होगा, नये पार्टनरशिप के साथ कार्य के लिये समय अनुकूल है, अपने कार्य की क्षमता को पहचानकर कार्य करें, घरेलू मामलों के लिये सप्ताह अच्छा है, सप्ताह के उत्तरार्ध में भाग्य साथ देगा, लक्ष्य की प्राप्ति के लिये आपको अत्याधिक खर्च और परिश्रम करना पडेगा.

मिथुन

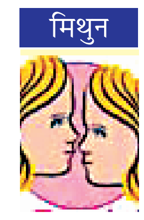

इस सप्ताह आपके अधिकारी व शुभचिन्तक धन कमाने में आपकी सहायता करेंगे, व्यापार से जड़े लोग बेहतर प्रदर्शन करें, सफलता मिलेगी, घरेलू आयोजन आनन्दमय रहेगा, आप अपने से जुड़े लोगों के साथ संवाद बनाये रखें, सकारात्मक दृष्टिकोण आपको सफलता दिलायेगा, जीवनसाथी की अपेक्षाएं बढ़ेगी, माता पिता के स्वास्थ्य का ध्यान रखें.

कर्क

इस सप्ताह अकेले काम का बोझ उठा लेने से आपको नुकसान हो सकता है, अपने सहकर्मियों या अधिनस्थों केकारण कुछ परेशानी हो सकती है, नये कारोबार की शुरूआत ठीक रहेगी,गलती को भूलकर आगे बढ़े, जीवन आसान हो जायेगा, कार्यक्षेत्र में आप मुश्किलों का डटकर सामना करें, सप्ताह में आपको अपने प्रयासों में अच्छी सफलता मिलेगी.

सिंह

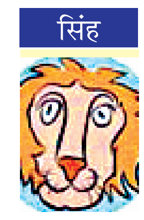

इस सप्ताह सभी लोग आपसे प्रसन्न रहेंगे, अपने घर में आप निर्माण संबंधी कोई सुधार कर सकते हैं, पुराना घर बेचकर नया घर खरीद सकते हैं, अविवाहितों को मनचाहा जीवनसाथी मिल सकता है, धार्मिक यात्रा होगी, छात्रों को कई मुश्किलों का सामना हो सकता है, व्यवसायिक वर्ग को नये अनुबंधों में शामिल होने के पहले विचार अवश्य करना चाहिये.

कन्या

इस सप्ताह प्रापर्टी के बारोबार में अच्छा लाभ मिलेगा, व्यापारी आयात निर्यात के बारोबार की शुरूआत कर सकते हैं, अपने व्यवहार और आत्म विश्वास का प्रयोग कार्यक्षेत्र मेंकरेंगे, आप अतिरिक्त जिम्मेदारी को आसानी से निभा सकते हैं, सप्ताह के शुरूआत में आप भ्रमण की स्थिति मेंरहेंगे, परन्तु धीरे धीरे आप नये आयामों की ओर बढ़ेंगे, वित्तीय स्थिति से संतुष्ट रहेंगे.

तुला

इस सप्ताह आसपास का माहौल खुशनुमा पायेंगे, मेहमानवाजी में आनन्द महसूस करेंगे, आफिस में आपके खुले विचारों को कोई पसंद नहीं करेगा. अतीत से वर्तमान के साथ सामंजस्य बैठाने की कोशिश करेंगे, शेयर में धन निवेश से परहेज करें, व्यवसाय में सावधानी बरतें, आपसी संबंधों में अनदेखी न करें, संतान की उन्नति होगी, गुमी वस्तु मिलने का योग है.

वृश्चिक

इस सप्ताह आप अपने लक्ष्य को हासिल करने में सफल रहेंगे, घर के सदस्यों के स्वास्थ्य को लेकर थोड़ी परेशानी का सामना करना पड़ेगा, आस पड़ोस या रिश्तेदारों के साथ संबंध सुधरेंगे, सप्ताह में व्यवसाय व्यापार में विस्तार की संभावना बरती हैं, लोग अपनी बात समझाने में सफल रहेंगे. मेल मुलाकात उपयोगी रहेगी, अधिनस्थ आपका सहयोग रहेगा.

धनु

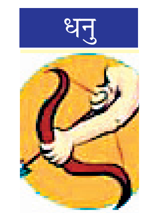

इस सप्ताह कार्यक्षेत्र में आपको प्रतिभा दिखाने का बेहतर अवसर मिलेगा, आपको उत्तराधिकार का अवसर मिल सकता है, अपनी उदारता पर अंकुश रखा तो राहत मिलेगी, कार्यक्षेत्र प्रभावित होगा, छात्रों को प्रतियोगी परीक्षा में सफलता मिलेगी, सप्ताह में किसी रिश्तेदार से सुखद समाचार मिलेगा. कार्यक्षेत्र में उन्नति होगी, आमदानी में वृद्धि होगी,

मकर

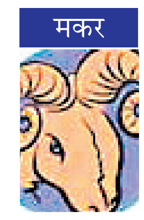

इस सप्ताह परिस्थिति के अनुकूल विनम्रता अच्छी सफलता दिला सकती है, बहसबाजी और मुंह पर बोलने की आदत पर रोक लगायें, कार्य और व्यापार को सिर्फ धन कमाने का साधन ही नहींसमझें, बल्कि वह प्रतिष्ठा का आधार भी मानें, सामाजिक जिम्मेदारी अच्छे से निभायेंगे, परिश्रम अधिक करना होगा, कार्यक्षेत्र में प्रभावशाली सिद्ध होंगे.

कुम्भ

इस सप्ताह आपको कठिन प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ेगा, निर्धारित लक्ष्यों को पूरा करने के लिये अधिकारी दबाव बना सकते हैं, पद प्रतिष्ठा प्राप्ति का योग है, पारिवारिक जीवन में प्रेम आनन्द की अनुभूति मिलेगी, सप्ताह के मध्य विपरीत परिस्थिति से डटकर मुकाबला करना होगा, आप सही और गलत के बीच उलझ सकते हैं, जीवनसाथी के स्वास्थ्य का ध्यान रखें.

मीन

इस सप्ताह पहले से चले आ रहे कार्य जारी रहेंगे, नये कार्यो में हाथ न डालें, लंबे समय से जिस सफलता की उम्मीद कर रहे हैं, वह मिलेगी, कार्यक्षेत्र में आपको विरोधियों का सामना करना होगा, जोड़ों का दर्द, बुखार आदि से परेशानी हो सकती है, पारिवारिक कार्यो में सफलता मिलेगी, भावनात्मक संबंधों में निकटता आयेगी, प्रापर्टी से अच्छा लाभ मिलेगा.